राष्ट्रीय लोकप्रिय पत्रिका
अभिव्यक्ति की बेबाक आवाज
सत्ता और समाज
वर्ष-3 अंक-9 10 मई 2014 रायपुर (मासिक) आरएनआई नं. CHHHIN2011/40896 पृष्ठ-40

जिन हाथों ने खंजर-बंदूक उठाने थे, उन्हें कलम थमाई डा. सामंत ने

वर्तमान परिदृश्य में भारत के हालात को देख कर लगता है की बहुतायत में लोगों के पास चर्चा और परिचर्चाओं के द्वारा हर बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान हैं और सभी इस राष्ट्र के सामने मौजूदा हर संकट को हल करने में तत्पर हैं। लेकिन वास्तविकता में जो घट रहा है, वह भाषणों और घोषणाओं से कोसों दूर है।

हाल ही में अंडमान और निकोबार की आदिवासी प्रजाति के कुछ पुरुष सदस्यों ने अन्य लोगों द्वारा उनकी महिलाओं के साथ किये जाने वाले यौन शोषण का खुलासा कर के सब को चौंका दिया। भारत में लगभग 700 के करीब आदिवासी प्रजातियाँ हैं, जो प्रकृति के निकट अपने विशेष रहन सहन के कारण समाज में एक खास स्थान रखती हैं और इसी कारण से भारत सरकार ने संविधान में उन्हें अनुसूचित जनजाति का दर्जा देकर, उनके विशेष अधिकारों को संरक्षित रखा है। लेकिन बहुत दुःख की बात है की, जिन जनजातियों को संरक्षण प्रदान करने की हमारा संविधान कवायद करता है, आज वही सबसे ज्यादा शोषित वर्ग बन चुका है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक असंख्य ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहां इन लोगों की मासूमियत और ईमानदारी का लाभ उठा के कई मौकापरस्त लोग अपना उल्लू सीधा करते मिलेंगे। इन जनजाति के युवाओं को आसानी से बरगला के इन्हें हिंसा के मार्ग पर धकेला जा रहा है, इनमें से कई नौजवान आतंकवाद या नक्सलवाद की भेंट चढ़ के अपना बहुमूल्य जीवन बर्बाद कर देते हैं। सफेदपोश अवसरवादी लोग भी खुद को इनका हिमायती साबित करके अनुदान ईखट्टा करने का मौका नहीं चुकते और इनका भरपूर शोषण करते हैं।

लेकिन इन सभी दुखद घटनाओं के बीच भी बहुत बड़े स्तर पर एक अनोखा प्रयास भी हो रहा है जो विश्व में अब तक का सबसे बड़ा और सफल प्रयास साबित हुआ है। पिछले दो दशकों से चुप चाप एक व्यक्ति ओडिशा राज्य की राजधानी भुबनेश्वर में, जहां की भारत की सबसे अधिक आदिवासी प्रजातियाँ पाई जाती हैं, उनके जीवन को सवारने में लगा हुआ है। **डॉ अच्युत सामंत नाम के इस व्यक्ति ने अपनी अद्वितीय सोच और दूरदर्शिता से वह कर दिखाया है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उनके द्वारा वर्ष 1993 में स्थापित कलिंग इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज (KISS) में आज २०,००० से भी अधिक आदिवासी बच्चे उच्च स्तर की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और यही नहीं यहाँ शिक्षा के साथ-साथ रहने ,भोजन तथा स्वास्थ्य जैसी अन्य सभी सुविधाओं का भी लाभ उठा रहे हैं, और सोने पर सुहागा ये की यह सब बिलकुल निशुल्क है।** वहां जाकर देखने पर यह आभास होता है की इन सभी बच्चों का डॉ. सामंत से कोई रिश्ता है जो केवल ये बच्चे और डॉ. सामंत ही समझ सकते हैं।

कहते हैं प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या, आज आप KISS द्वारा प्रशिक्षित कई छात्रों को देखेंगे जो कई बड़े संस्थानों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम कर रहे हैं और राष्ट्र की तरक्की तथा उन्नति में भागी बन रहे हैं। ये वही बच्चे हैं जो शिक्षा के अभाव में आसानी से बरगलाये जा सकते थे, जिन हाथों में कोई समाज विरोधी काम करने के लिए हथियार थमा देता, डॉ. सामंत ने उन्ही हाथों में कलम थमा दी।

स्वयं अपने जीवन में अभाव को बहुत करीब से देखने वाले डॉ. सामंत इन आदिवासी बच्चों को खाना और धन देने के दावे ना करके इन्हें ज्ञान की ताकत देने में विश्वास रखते हैं और वैसा कर भी रहे हैं। न तो KISS में इनकी संस्कृति और ना ही धार्मिक आस्थाओं से छेड़-छाड़ की जाती है, बल्कि डॉ. सामंत समय-समय पर इनके अभिभावकों को बुला के उनको भी जागरूक करते हैं। सबसे मजेदार बात यह है की आज तक इतने वर्षों में एक भी बच्चे ने अपनी शिक्षा पूरी किये बिना KISS को बीच में नहीं छोड़ा है।

मात्र पांच हजार रुपये की अपनी बचत राशि से डॉ. सामंत ने कलिंगा इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (KIIT) की शुरुआत 1992 में की थी, जो आज एक पूर्ण विश्वविद्यालय की शक्ल ले चूका है। इसी इंस्टिट्यूट से

प्राप्त होने वाले लाभ का रुख डॉ. सामंत ने KISS की और मोड़ दिया । आज भी एक अविवाहित का जीवन जी रहे डॉ. सामंत स्वयं एक किराये के मकान में ही रहते हैं और सादा जीवन जी रहे हैं । उनके अनुसार मुनाफे की सबसे बड़ी परिभाषा भारत के हर गरीब बच्चे को शिक्षित करना ही है, अब वे अपने इस सपने का दायरा बढ़ाने में तत्पर हैं | उनके इस मॉडल से प्रभावित होकर, पिछले वर्ष दिल्ली सरकार ने भी गरीब बच्चों के लिए **"के. आई. एस. एस. दिल्ली"** की शुरुआत की, जो सुचारु रूप से चल रहा है और डॉ. सामंत का प्रयास है की KISS की शाखाएं और भी राज्यों में खोली जाएँ ।

KISS के अधिकतर कार्यों में UNDP, UNICEF, UNESCO, UNFPA और US Federal Government की भागीदारी से यह पता चलता है, की किस तरह इस संस्थान को विश्व विख्यात संस्थान विकास का एक उत्तम मॉडल स्वीकार करते हैं । डॉ. सामंत से बात करने पर पता चलता है की विश्व के कई और देश भी इस संस्थान को विकास के एक सम्पूर्ण मॉडल के रूप में स्वीकृति देते हैं । कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचार पत्र-पत्रिकाओं ने, डॉ. सामंत के इस प्रयास को अपने प्रकाशनों में सम्मानित जगह प्रदान की है| डॉ. सामंत को समय-समय पर अनेकों विशेष सम्मान से भी सम्मानित किया गया है | डॉ. सामंत इस समय स्वयं भी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के सदस्य भी हैं । अपनी सफलता का राज़ पूछे जाने पर, अपने व्यक्तित्व के अनुरूप ही सादे स्वभाव वाले डॉ. सामंत कहते हैं , " अथक परिश्रम, निरंतर अपने लक्ष्य की और बढ़ना और ईश्वरीय कृपा, इसी से सब संभव हो पाता है । विश्व को एक नया और सफल मॉडल देने वाले इस मार्ग दर्शक का अपना जीवन आज भी बहुत सरल है और पूछने पर वह बताते हैं , " मेरे जीवन का मूल मंत्र है की जो भी मेरे पास है मैं उसे दूसरों को दे सकूँ, जिससे की उसके और अन्य दूसरों के जीवन का कल्याण हो और एक सुन्दर समाज का निर्माण हो सके । अपने पूरे जीवन में मैंने इस बात को जिया है की, जो खुशी सुख देने में है वह दुनिया की और किसी चीज़ में नहीं है | इसी विचारधारा को मूर्त रूप देते हुए डॉ. सामंत ने बीते वर्ष **"आर्ट ऑफ़ गिविंग"** की शुरुआत भी की है|

लेखक- डा. ए. सामंत